ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्

साप्ताहिक आर्य सन्देश

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का मुखपत्र

मा: नो मर्ता आभि द्रुहन्।। ऋग्वेद 1/5/10
मनुष्य परस्पर द्वेष न करें।
Humans shuld not hate each other.

वर्ष 38, अंक 12 एक प्रति : 5 रुपये
सोमवार 26 जनवरी, 2015 से रविवार 1 फरवरी, 2015
विक्रमी सम्वत् 2071 सृष्टि सम्वत् 1960853115
दयानन्दाब्द : 191 वार्षिक शुल्क : 250 रुपये पृष्ठ 8
फैक्स : 23365959 ई-मेल :aryasabha@yahoo.com
इंटरनेट पर पढ़ें – www.thearyasamaj.org/aryasandesh

उत्साह, संकल्प और धूम-धाम से मनाएँ ऋषि पर्व

महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव ऋषि पर्व के रूप में मनाएँ – आचार्य बलदेव

ऐसे विशेष अवसरों पर वेद और आर्यसमाज के प्रचार-प्रसार के निमित्त कुछ सुझाव

भारतीय काल चक्र गणना के अनुसार आदित्यों में उत्तम फाल्गुन मास का आगमन होता है तो ऋतुओं के राजा वसन्त भी विराजमान हो जाते हैं। जिनकी उपस्थिति में प्रकृति अपनी निराली छटा चारों ओर बिखेरना प्रारंभ कर देती है।

दिग्-दिगन्तों में जोश, उमंग, उत्साह, प्रेरणा से ओत्-प्रोत् हरियाली और फूलों की भीनि-भीनि सुगंध से जहां सारा विश्व महकने लगता है वहीं भारतीय जनमानस में एक तीव्र स्फटिंग की तरह क्रांति का संचार करने वाले पर्वों की दिव्य श्रृंखला प्रस्तुत हो जाती है इसीलिए भारतवर्ष को पर्वों का देश कहा जाता है। पर्व -उल्लास एवं प्रसन्नता का द्योतक है। उत्सव अर्थात् उत्साह पूर्वक किए जाने वाले कार्य जो दूसरों में भी उत्साह व प्रसन्नता का संचार कर देते हैं वहीं प्रेरणा दायक कार्य पर्व और उत्सव कहे जाते हैं। इसी वासन्ती पर्वों की श्रृंखला में आने वाले पर्व-वसन्त-पंचमी, महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव एवं बोधोत्सव, होली मंगल मिलन व नववर्ष (आर्यसमाज स्थापना दिवस) जैसे - पर्वों का संगम इस महान ऋतुराज वासन्ती वेला में होने वाला है।

हम सब आर्यजन अपने स्तर पर महर्षि दयानन्द सरस्वती के जन्मदिवस एवं बोधदिवस को ऋषि पर्व के रूप में मनाते आ रहे हैं। आगामी ऋषि पर्व को हम अधिक उत्साह एवं संकल्पशक्ति से मनाएँ और ऋषिप्रणीत साहित्य का वितरण स्टॉल आदि लगाकर करें ताकि ऋषिवर के महान्विचार जन-जन तक पहुँच सके जिससे वैदिक ज्ञान प्राप्त कर व्यक्ति अपने जीवन को सफल बना सके।- ***सम्पादक***

- शेष पृष्ठ 6 पर

भव्य भजन संध्या एवं प्रेरक मार्गदर्शन

यज्ञ : सायं 3:15 बजे **भजन संध्या :** सायं 4:15 बजे **प्रीतिभोज :** सायं 7 बजे

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के सिद्धान्तों एवं आर्यसमाज की मान्यताओं को जनमानस तक पहुंचाने में सहयोगी बनें।

निवेदक :- दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, आर्यसमाज कीर्ति नगर एवं पश्चिमी दिल्ली वेद प्रचार मंडल के समस्त अधिकारी, कार्यकर्ता एवं सदस्यगण

यज्ञ : प्रात: 8 बजे **कार्यक्रम :** प्रात: 10 बजे **सार्वजनिक सभा :** दोपहर :1:30 बजे

टीवी चैनल पर सीधा प्रसारण सौजन्य : MDH

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर कार्यक्रम को सफल बनाने में सहयोग करें

निवेदक

महाशय धर्मपाल	सुरेन्द्र कुमार रैली	राजीव आर्य	अरुण प्रकाश वर्मा
प्रधान	व. उप प्रधान	महामन्त्री	कोषाध्यक्ष

आर्य केन्द्रीय सभा (दिल्ली राज्य) - 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के अन्तर्गत आर्य विद्या परिषद् दिल्ली के तत्त्वावधान में

आर्य विद्यालयों में प्रथम चरण की नैतिक शिक्षा परीक्षा सम्पन्न : 10 हजार बच्चों ने दी परीक्षा

आर्य विद्यालयों में बच्चों का सर्वांगीण विकास हो, इस बात के लिए आर्य विद्या परिषद निरंतर प्रयासरत है। बच्चों को शैक्षिक ज्ञान के अलावा 'नैतिक शिक्षा' की भी व्यवस्था विद्यालय में की गई है। प्रतिवर्ष 23 जनवरी को 'नेताजी सुभाषचन्द्र बोस जयन्ती' के अवसर पर सभी विद्यालयों में एक साथ इस नैतिक शिक्षा की परीक्षा का आयोजन किया जाता है। इस वर्ष इस परीक्षा को दो चरण में सम्पन्न करवाने का निर्णय किया गया। प्रथम चरण 23 जनवरी को दिल्ली के 25 आर्य विद्यालयों में यह परीक्षा सम्पन्न हुई जिसमें लगभग 10 हजार विद्यार्थियों ने भाग लिया। दूसरे चरण की परीक्षा 3 फरवरी (मंगलवार) को दिल्ली के 15 विद्यालयों व विभिन्न राज्यों के विद्यालयों में सम्पन्न होगी। 90 प्रतिशत अंक प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को पुरस्कृत किया जाएगा।

द्वितीय चरण की परीक्षा 3 फरवरी को होगी

नैतिक ज्ञान को केवल पढ़ना या लिखने ही से उद्देश्य पूर्ति नहीं होती जब तक उसको आचरण में न लाया जाए। आर्य विद्यालयों में बालको को संस्कारवान् बनाने के लिए नैतिक शिक्षा एक अतिरिक्त विषय के रूप में लागू किया गया है और समय-समय पर छात्रों को शिविरों के माध्यम से भी प्रशिक्षित किया जाता रहा है। नैतिक शिक्षा एक विषय ही नहीं यह एक मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया भी है जो बालक को आदर्शत्व प्रदान करती है। - ***संयोजिका***

वेद-स्वाध्याय

जीवन-यज्ञशाला का निर्माण

- स्वामी देवव्रत सरस्वती

यूपऽव्रस्काऽउत ये यूपवाहाश्चषालं ये अश्वयूपाय तक्षति।
ये चार्वते पचनꣳ सम्भरन्त्युतो तेषामभिगूर्त्तिर्नऽइन्वतु ॥
यजुः० २५।२९

अर्थ—(**यूपव्रस्काः**) यज्ञ स्तम्भ का छेदन करने वाले (**उत**) और (**ये**) जो (**यूपवाहाः**) यूपों का वहन करने वाले (**ये**) जो (**अश्वयूपाय**) इन्द्रियाश्वों को बांधने वाले यूप का (**चषालम्**) ऊपर का भाग, सिर (**तक्षति**) सूक्ष्म, तीक्ष्ण बनाते हैं। (**ये च**) और जो (**अर्वते**) विषयों की ओर जाने वाले इन्द्रिय अश्वों के लिये (**पचनम्**) पाचन करने वाली बुद्धि को (**सम्भरन्ति**) धारण, पुष्ट करते हैं (**तेषाम्**) उनका यह (**अभिगूर्त्तिः**) उद्योग, पुरुषार्थ (**नः**) हमें (**इन्वतु**) प्राप्त होवे।

पुरुषो वाव यज्ञः (छा० ३.१६.१) मानव का जीवन यज्ञमय और उसका शरीर यज्ञशाला है। मन्त्र में इस यज्ञशाला का निर्माण कैसे करें यह बतलाया है।

१. जैसे यज्ञों में अश्वादि को बांधने के लिये यूप गाड़े जाते हैं और सुदृढ़ स्तम्भों को छीलकर अष्ट कोणाकार बना बढ़ई लोग उन पर यज्ञशाला का निर्माण करते हैं वैसे ही इस यजमान, ब्रह्मचारी के हाथ-पैर और शरीर यष्टि का निर्माण करने वाले गुरु '**यूपव्रस्का**' कहलाते हैं जो इसे व्यायाम का अभ्यास कराते हुये इसके शरीर पर चर्बी की परत नहीं चढ़ने देते। छरहरा युवक ही सक्रिय बन सभी कार्यों को स्फूर्ति से कर सकता है।

२. **ये यूपवाहा**—दूसरे वे गुरुजन हैं जो इनका मार्गदर्शन करते हुये कहते हैं कि अमुक कार्य करो। जैसे यज्ञशाला में स्तम्भ कहाँ गाड़ा जाये इसका निर्णय मुख्य निर्माता करता है।

३. **ये चषालं अश्वयूपाय तक्षति** जो इस यज्ञिय यूप का ऊपर वाला भाग [मस्तिष्क] को कांट-छांट कर बनाते हैं। अर्थात् इस यज्ञकर्त्ता के मस्तिष्क से दुर्गुण-दुर्व्यसन दूर करा उन्हें निर्व्यसनी और सुन्दर बनाते हैं वे ऋत्विक् लोग बतलाते हैं कि अमुक कार्य को करने के लिये क्या करना उचित और किनका परित्याग करना चाहिये। जहाँ कहीं कोई त्रुटि दिखाई देती है वहाँ ये अपनी तराशने वाली छेनी को चला ही देते हैं और इनकी तक्षण, घर्षण, श्लक्ष्ण क्रिया से निर्जीव के समान यह ब्रह्मचारी उन्नत ललाट, सुपुष्ट शरीर और कर्त्तव्य पालन में दक्ष हो जाता है। किसी ने ठीक ही कहा है—**रंग लाती है हिना पत्थर पे घिस जाने के बाद।** पत्थर पर घिसे जाने पर ही मेहंदी रंग लाती है वैसे ही योग्य गुरुजनों के सान्निध्य में ही दोषों का निवारण होना सम्भव है। इस कार्य में यदि कष्ट भी सहने पड़ें तो उनके लिये तैयार रहना चाहिये।

४. **ये चार्वते पचनं सम्भरन्ति**—उछल-कूद करने वाले और काट खाने के स्वभाव वाले घोड़े को स्तम्भ से बांधने पर उसकी उछल-कूद बन्द हो जाती है वैसे ही जो आचार्य कामादि व्यसनों में जाने वाले इन्द्रियाश्वों को वश में करने के लिये अपने ब्रह्मचारियों की बुद्धि को परिपक्व अर्थात् विषयों के दोष दिखा उधर से विरक्त होने का प्रशिक्षण देते हैं वे सत्कार के योग्य हैं। इन्द्रियों को बलपूर्वक विषयों में जाने से रोकने के लिये हठधर्मिता के स्थान पर परिपक्व बुद्धि का निर्माण होना आवश्यक है जिस से विद्यार्थी स्वयं ही विषयों के दोष जान उनसे विरक्त होने का प्रयत्न करेगा।

५. **तेषामभिगूर्त्तिर्न इन्वतु**—पूर्वोक्त चार गुरुजनों का उद्योग, पुरुषार्थ, सहयोग हमें प्राप्त होवे। यजमान या ब्रह्मचारी की पाशविक वृत्तियों को नियन्त्रित कर उन्हें व्यापक ब्रह्म से जोड़ देने की प्रतीति कराने वाला यह यज्ञ यूप है। **यदनेनायोपयन् तस्माद् यूपः** (शत० १.६.२.१) इसके साथ यज्ञ को संयुक्त करने से इसका नाम यूप है। जीवन-यज्ञ के यजमान ब्रह्मचारी का यह यूप वज्र बन कर काम-क्रोधादि असुरों का संहार करता है। अतः पूर्वोक्त चार कार्यों के लिये उसे योग्य गुरुजनों के संरक्षण में रहते हुये शरीर यज्ञशाला का निर्माण करना होगा।

- *क्रमशः*

बोध-कथा

शीश दिया पर धर्म न छोड़ा : बालवीर हकीकत राय

बलिदान दिवस
बसन्त पंचमी पर विशेष

यह उस ज़माने की बात है जब शाह रंगीला का राज्य था। स्यालकोट की एक छोटी-सी पाठशाला में बालक हकीकतराय पढ़ता था। पढ़ानेवाले एक मौलवी साहब थे। एक दिन मौलवी साहब कहीं गए हुए थे। मास्टर जी न हों तो फिर बालकों का कहना क्या? मौज ही मौज। बालक खेलने लगे ।

खेल-खेल में कुछ लड़कों ने बालक हकीकतराय को गालियाँ दीं, बात बढ़ गई। उन्होंने हकीकतराय के पूज्य देवी-देवताओं की भी बेइज्जती की। हकीकतराय ने कहा,''अगर तुम्हारे पैगम्बर को भी यह बातें कही जाएँ तो?''

''है तुम्हारी इतनी हिम्मत? जरा कहकर तो देखो? उन लड़कों ने हकीकतराय को धमकी देते हुए कहा ।

बालक हकीकतराय ने वे ही शब्द दोहरा दिए जो उन्होंने हिन्दू देवी-देवताओं को कहे थे। मुसलमान लड़के बौखला उठे। उन्होंने बात का बतंगड़ बना दिया। मौलवी साहब जब आये तो उनसे शिकायत की गई। शिकायत हकीकतराय की गई और जो कुछ उसने कहा था उसको बढ़ा-चढ़ाकर कहा गया ।

हकीकतराय की विशेषता यह थी कि वह झूठ नहीं बोलता था। फल यह हुआ कि मौलवी साहब ने बात को रफा-दफा करने की बजाय हकीकत की शिकायत उस इलाके के हाकिम के पास कर दी। हकीकतराय को पकड़ लिया गया। उसे हथकड़ियों और बेड़ियों से जकड़कर अदालत में पेश किया गया।

काजी ने तो पहले ही सब बात सुन रखी थी। उसने अपना फैसला सुनाते हुए कहा, ''अगर तू मुसलमान बन जाए तो मौत से बच सकता है।''

मौत की बात सुनकर उसकी पत्नी मूच्छित हो गई। हकीकतराय की माता ने उसको समझाया,'' बेटा! तू मुसलमान हो जा। इससे तू जीवित तो रहेगा और हम तुझे अपनी आँखों से देख तो सकेंगे।"

ऐसे मौके पर काजी ने एक और बात कर दी, ''अगर तुम मुसलमान बन गये तो तुम्हें ऊँचा ओहदा दिलवा दिया जाएगा।"

बालक हकीकत धर्मवीर था। उसने अपनी माँ से कहा, ''माँ! मैं अमर होकर तो पैदा हुआ नहीं। जब एक न एक दिन मरना ही है तो जरा से लोभ-लालच में आकर अपना ईमान क्यों खराब करूँ? अपना धर्म बेचकर जीने से तो मरना कहीं अच्छा है। ''

लोग सुनकर हक्का-बक्का रह गये। काजी ने फिर उसको समझाने का यत्न किया। यद्यपि उसका यह समझाना किसी सद्भावना से नहीं था। बालक हकीकत भी इस बात को समझता था। उसने दृढ़ शब्दों में कह दिया, ''मैं अपना धर्म नहीं छोड़ सकता।"

और खुले मैदान में उसी समय उसका सिर धड़ से अलग कर दिया गया ।

आज भी समूचे पंजाब में धर्मवीर हकीकतराय की स्मृति में बसन्त का मेला धूमधाम से मनाया जाता है ।

शहादत हकीकत की मत भूल जाएँ

हकीकत को फिर ले गए कत्लगाह में, हजारों इकठ्ठे हुए लोग राह में।
चले साथ उसके सभी कत्लगाह को, हुयी सख्त तकलीफ शाही सिपाही को।।
किया कत्लगाह पर सिपाहियों ने डेरा, हुआ सबकी आँखों के आगे अँधेरा।
जो जल्लाद ने तेग अपनी उठाई, हकीकत ने खुद अपनी गर्दन झुकाई।।
फिर एक वार जालिम ने ऐसा लगाया, हकीकत के सर को जुदा कर गिराया।
उठा शोर इस कदर आहो फुंगा का, के सदमे से फटा पर्दा आसमां का।।
मची सख्त लाहौर में फिर दुहाई, हकीकत की जय हिन्दुओं ने बुलाई।
बड़े प्रेम और श्रद्धा से उसको उठाया, बड़ी शान से दाह उसका कराया।।
तो श्रद्धा से उसकी समाधी बनायी, वहां हर वर्ष उसकी बरसी मनाई।
वहां मेला हर साल लगता रहा है, दिया उस समाधि में जलता रहा है।।
मगर मुल्क तकसीम जब से हुआ है, वहां पर बुरा हाल तबसे हुआ है।
वहां राज यवनों का फिर आ गया है, अँधेरा नए सर से फिर छा गया है।।
अगर हिन्दुओं में है कुछ जान बाकी, शहीदों बुजुर्गों की पहचान बाकी।
शहादत हकीकत की मत भूल जाएँ, श्रद्धा से फूल उस पर अब भी चढ़ाएं।।
कोई यादगार उसकी यहाँ पर बनायें, वहां मेला हर साल फिर से लगायें।

-*डॉ. गोकुल चाँद नारंग*

सज्जनो! हकीकत का जन्म 1719 ई0 में सियालकोट पूर्व पंजाब (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ था । पिता का नाम श्री भागमल महाजन एवं माता श्रीमती कौरा देवी थी। उस अबोध बालक ने धर्म की रक्षा के लिए अपना शीश कटाना तो स्वीकार किया परंतु अधर्म और अन्याय के प्रति झुकना नहीं स्वीकारा। उन्होंने अपने बलिदान से अपने माता-पिता का ही नहीं राष्ट्र का भी नाम उँचा किया। बल्कि महापुरुषों की पंक्ति में भी अपना स्थान निश्चित किया।

151वें जन्मदिवस (28 जनवरी) पर विशेष

Lala Lajpat Rai : vision of Dalit Reformation

- Dr. Vivek Arya

Lala Lajpat Rai, Sher-i-Punjab was, indeed a lion both in thought and deed, in what he professed and practiced, in his political, social and even economic ideas and ideals, in his sense of service, patriotism and nationalism, in his dealings with the 'old' and the 'new', the high and the mighty, and the low and the depressed. Issues and problems affecting the lot and destiny of the dalits had a special place in his ideas and vision of nation building. He witnessed the Indian society was characterized by status summation i.e. low status in the caste hierarchy itself implied a correspondingly low status in social, religious and economic position. Dalits formed the most indigent, ostracized, apolitical and illiterate section of the Indian society. During his student age Lala ji was attracted towards Aryasamaj because of its nationalistic outlook, its program of social reform, its education mission and the spirit of self-sacrifice, self-reliance and self-help that it instilled in the young minds. His views were nurtured by the company of brilliant scholar Pundit Guru Dutt Vidyarthi and Lala Hansraj with whom he later established DAV institutions.

Lala ji considered the rigidity of Hindu Caste system as bane of Hindu society and a barrier in social and national progress of the Hindus. He considered it as a disgrace to humanity, sense of justice and feeling of social affinity. He considered allowing of valuable human resource to rot in a state of utter depression and helplessness as unsound by all aspects. He was against categorization of Indian population in census on basis of religion, caste, tribe etc. as an attempt by Britishers to implement divide and rule policy. He openly condemned Christian missionaries proselytizing activities and considered it as regular toll and loss to Hindu society. He said that the missionaries who were posing as social levelers and egalitarians had failed to eradicate caste distinctions and were only building castles

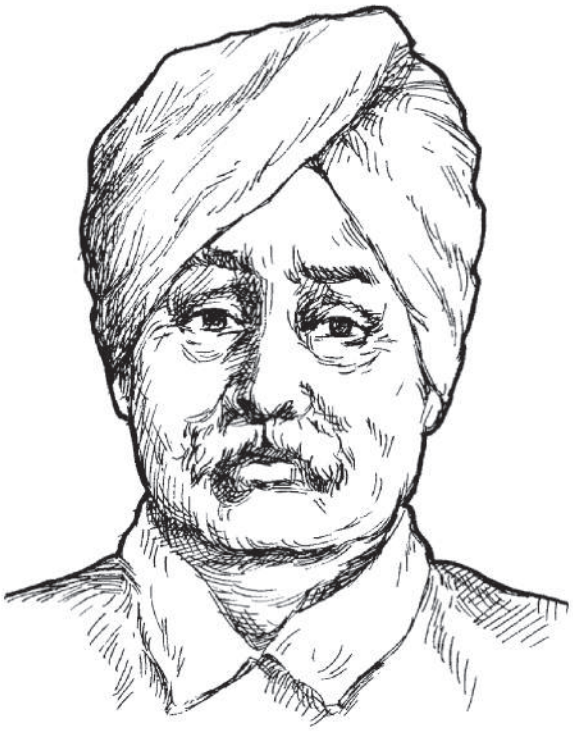

in the air. Christianity has failed to emancipate caste system while the bureaucracy wanted to give caste a new orientation to make it subservient to imperial needs. He considered caste and inter caste jealousies as blockage for national progress. He was critical of maltreatment meted out to dalits in different parts of country. In one of speeches as president of depressed classes at Gurukul Kangdi he chided the Rajputs of Hoshiarpur for cruelty to kabirpanthis, the Brahmans of Jammu for placing a hot plate iron on the body of a vashisht caste Hindu and people of Ludhiana for not allowing a Ramdasi Hindu to drink water from municipal tap. He was critical of Hindu attitude towards untouchables before and after conversion. He said as a Hindu you won't touch him [Dalit], you would not let him sit on the same carpet with you, you would not offer him water in your cups, you would not accept water or food touched by him, you would not let him enter your temple, in fact you would not treat him like a human being. The moment he becomes a Mohammadan or a Christian, without even giving up his ancestral occupation, you are all smiles to him, you welcome him to your home; and have no objection at times to offer him drink and food in your utensils etc. What an irony? What a paradox? Why and where did the so much boasted of tolerance of the Hindus disappear, the moment that tolerance was demanded by the classes lower in the social scale? Was that Hinduism? No, he believed that it was nothing but disgrace to the good name of Hinduism.

Lala ji pressed on levelling down of all equalities and wanted that the reformation must begin from below. He supported Varna system and rejected caste system. He pointed out that the Hindus had established their caste system (Varna system) on the basis of work, merit and disposition. The division was founded on justice and the needs and principles of the community. But afterword's the classification became purely a matter of birth and the institution of caste was clothed with a divine sanction to the glory of the Brahman and the desecration of the Shudra.

Lala ji supported the Aryasamaj concept of Shuddhi of dalits who were made non Hindu by force or incentive in past. Aryasamaj motive was not only to water down the apartheid character of the caste super-structure of the Hindu society by asserting that individual's caste status was always achieved and not ascribed, and by reclamation, reconversion and Shuddhi, the Aryasamaj put the dalits at a slightly higher social substratum, but it also made systematic and sustained efforts to make the untouchables coalesce in the society as an agreeable section. Aryasamaj was instrumental in providing age old deprived facilities like water, education, technical training and thus economic uplift. The main idea behind this exercise was eradication of evils of caste system and creation of Hindu Sangthan. The social work done by Aryasamaj in different famines and opening of orphanages for orphans was another achievement to his works. The inter caste marriages and widow remarriage was like social revolution in caste ridden society. Opening of school, college and Gurukul both for boys as well as girls where education was provided irrespective of caste differentiation was turning point in field of education.

In nutshell, Lala ji had a very soft corner for the dalits and his remedial measures had the stamp of his own making. The social and national efficiency of a nation can never be achieved until hard steps are not taken to eradicate the evils of caste system. The dream of Lala ji is still unfilled even after 66 years of independence because of lack of political will. Today caste is withering but casteism is flourishing. The evil of casteism must be destroyed from our minds to unite Humanity. Varnashram system is the only plausible balm, which can be put on the afflicting wounds of humanity.

साप्ताहिक आर्य सन्देश में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक मंडल अथवा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा का सैद्धान्तिक मतैक्य होना आवश्यक नहीं है। - सम्पादक

नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला- 2015 के अवसर पर प्रगति मैदान में होगा

वृहद् स्तर पर वैदिक साहित्य का प्रचार-प्रसार

25000 लोगों तक सत्यार्थ प्रकाश पहुंचाने का लक्ष्य : सहयोग की अपील

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से हिन्दी-अंग्रेजी साहित्य हेतु 8 स्टॉल बुक

आर्यजन अधिकाधिक संख्या में मित्रों एवं सम्बन्धियों के साथ पहुंचने के लिए प्रेरित करें।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा एवं आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से नई दिल्ली विश्व पुस्तक मेला-2015 के अवसर पर प्रगति मैदान में होगा। इस अवसर पर वृहद् स्तर पर वैदिक साहित्य का प्रसार-प्रसार शनिवार 14 फरवरी से सोमवार 22 फरवरी 2015 तक 7 स्टॉल हिन्दी और 1 स्टॉल (अंग्रेजी) में लगाया जाएगा। आर्यजन ई-मेल, एस.एम.एस., फेसबुक, ट्वीटर आदि के माध्यम से स्टॉल नं. की सूचना पहुँचाकर जनसाधारण को आमन्त्रित करने में सहयोगी बने ।

यह पुस्तक मेला वैदिक साहित्य प्रचार की दृष्टि से एक ऐसा मंच होता है। जहाँ हर रोज ऐसे व्यक्ति जो आर्य समाज महर्षि दयानन्द सरस्वती तथा वैदिक साहित्य से अनजान होते है या बहुत कम जानकारी रखते हैं। उस प्रत्येक व्यक्ति तक इन सबकी जानकारी पहुँचाना ही हमारा उद्देश्य है। इसी उद्देश्य की पूर्ति हेतु सभा ने आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से पहली बार सात स्टॉल हिन्दी तथा एक स्टॉल अंग्रेजी साहित्य के लिए बुक कराया है। इस बार कम से कम 25000 सत्यार्थ प्रकाश मात्र 10/- रुपये में पहुँचाने का लक्ष्य निर्धारित किया है। जबकि सत्यार्थ प्रकाश का न्यूनतम मूल्य 50/-रुपये है। इससे पहले के पुस्तक मेलों में कुरान और बाइबिल को लाखों प्रतियाँ नि:शुल्क वितरित की गई थी। अत: आर्य समाजें, शिक्षण संस्थाएँ एवं दानी सज्जनों से अनुरोध है कि साहित्य प्रचार-प्रसार के इस यज्ञ में अपनी सहभागिता निश्चित कर वेद और महर्षि के मन्तव्यों के प्रचार प्रसार के लिए तन-मन-धन से सहयोग दें। आर्थिक सहायता नकद अथवा चैक द्वारा दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के नाम भेज सकते है अथवा सीधे दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के एक्सिज बैंक खाता सं. 910010009140900 में जमा करा सकते हैं। कृपया राशि जमा कराने के बाद **श्री विजय आर्य जी को उनके मोबाइल नं. 9540040339** पर सूचित अवश्य करें ताकि आपको आपकी दान राशि की रसीद भेजी जा सके। - *महामन्त्री*

अपनी ओर से सत्यार्थ प्रकाश पर सब्सिडी हेतु सहयोग जमा करें
'दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा' खाता सं. 910010009140900
एक्सिज बैक, IFSC - UTIB0000223 MICR - 110211025

पुस्तक मेले का महत्व

आर्यसमाज एक विचार है। उस विचार को लाखों-करोड़ों लोगों तक पहुंचाने का सशक्त माध्यम है पुस्तकें। पुस्तकों को लेने की इच्छा रखने वाले लाखों पुस्तक प्रेमी इन पुस्तक मेलों में पधारते हैं वहां वे विभिन्न विचारधाराओं की पुस्तकों से रुबरु होते हैं। यदि हम अपनी सशक्त उपस्थिति न दर्शा सके तो निश्चित रूप से हम प्रचार का एक बहुत बड़ा अवसर खो रहे होंगे। इन पुस्तक मेलों के महत्व का इस बात से अनुमान लगा सकते हैं कि10×10 की एक स्टॉल का मूल्य 60 हजार रुपये है। हिन्दी साहित्य की पुस्तक वालों के लिए यह राशि 33 हजार रुपये है। मुस्लिम सम्प्रदाय और ईसाई सम्प्रदाय के लोग एक अनुमान के अनुसार 50-50 स्टॉल बुक कराते हैं और वहां प्रत्येक आने वाले व्यक्ति को कुरान के साथ चार पुस्तकें नि:शुल्क भेंट करते हैं। सुन्दर थैलों के ऊपर छपा होता है पवित्र कुरान, और प्रगति मैदान के गेट से बाहर निकलने वाले अनेक लोगों के हाथों में यह थैला दीख जाएगा। सभा ने आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट के सहयोग से 7 स्टॉल हिन्दी तथा एक स्टॉल अंग्रेजी भाषा के साहित्य के लिए आरक्षित कराया है, जिसका मूल्य 55 हजार रुपये है। सजावट के खर्चे, नि:शुल्क बांटने वाले पत्रक तथा प्रगति मैदान की सड़कों पर लगने वाले होर्डिंग के व्यय कितने होंगे, इसका आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं। इसके अलावा 30-40 कार्यकर्त्ता रोजाना वहां पर प्रचार कार्य में नि:शुल्क सहयोग करते हैं तब जाकर हम अपनी उपस्थिति का एहसास पुस्तक मेलों में करा पाते हैं। 10-10 रुपये में सत्यार्थ प्रकाश देने की जो योजना है, वह इसी रूप में उपयोगी है कि हम जन-जन तक इसे पहुंचा पा रहे हैं। खास बात उस व्यक्ति की जो पुस्तक लेने की इच्छा में वहां तक पहुंचा। अत: मेरा आप सभी से आग्रह है कि इस प्रचार यज्ञ में अपना सहयोग अवश्य दें। एक सत्यार्थ प्रकाश को कम मूल्य पर देने पर 20 रुपये का व्यय आता है। आप इस व्यय के लिए कुछ न कुछ सत्यार्थ प्रकाश का सहयोग अवश्य दें। आर्यसमाजों एवं आर्य संस्थाओं से अनुरोध है कि कम से कम 100 सत्यार्थ प्रकाश हेतु 2000/- रुपये राशि अवश्य दें तथा प्रचार-प्रसार हेतु अपना समय दान भी दें। - *महामन्त्री*

ओ३म्

आर्य पर्वों की सूची : विक्रम सम्वत् 2071-72 तद्नुसार सन् 2015

क्र. सं.		पर्व का नाम	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	वार
1.		लोहड़ी	माघ कृष्ण, 8 वि. 2071	13/01/2015	मंगलवार
2.		मकर-संक्रान्ति	माघ कृष्ण, 9 वि. 2071	14/01/2015	बुधवार
3.		वसन्त-पंचमी	माघ शुक्ल, 5 वि. 2071	24/01/2015	शनिवार
4.		गणतन्त्र दिवस	माघ शुक्ल, 7 वि. 2071	26/01/2015	सोमवार
5.		सीताष्टमी	फाल्गुन कृष्ण, 8 वि.2071	12/02/2015	गुरुवार
6.	ऋषि-पर्व	महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव	फाल्गुन कृष्ण,10 वि.2071	14/02/2015	शनिवार
7.	ज्योति-पर्व	शिवरात्रि (ऋषि बोधोत्सव)	फाल्गुन कृष्ण, 13 वि.2071	17/02/2015	मंगलवार
8.	वीर-पर्व	पं.लेखराम बलिदान दिवस	फाल्गुन शुक्ल, 3 वि. 2071	21/03/2015	शनिवार
9.	मिलन-पर्व	नवसंस्येष्टि (होली)	फाल्गुन पूर्णिमा, वि. 2071	05/03/2015	गुरुवार
10.		आर्य समाज स्थापना दिवस/ चैत्र शुक्ल प्रतिपदा/नवसम्वत्सर/ उगाड़ी/गुड़ी पड़वा/ चैती चांद	चैत्र शुल्क, 1 वि.2072	21/03/2015	शनिवार
11.		रामनवमी	चैत्र शुक्ल, 9 वि. 2072	28/03/2015	शनिवार
12.		वैशाखी	वैशाख/कृष्ण, 10 वि. 2072	14/04/2015	मंगलवार
13		पं. गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस	बैशाख शुक्ल 3 वि.2072	21/04/2015	मंगलवार
14.		हरितृतीया(हरियाली तीज)	श्रावण शुक्ल, 3 वि.2072	17/08/2015	सोमवार
15.	वेद-प्रचार समारोह	श्रावणी उपाकर्म-रक्षा बन्धन	श्रावण पूर्णिमा, वि. 2072	29/08/2015	शनिवार
16.		हैदराबाद सत्याग्रह दिवस	भाद्रपद कृष्ण, 4 वि.2072	02/09/2015	बुधवार
17		श्री कृष्णजन्माष्टमी	भाद्रपद कृष्ण, 8 वि. 2072	05/09/2015	शनिवार
18.		विजय दशमी/दशहरा	आश्विन शुक्ल, 10 वि.2072	22/10/2015	गुरुवार
19.		स्वामी विरजानन्द दण्डी जन्म दिवस	आश्विन शुक्ल, 12, वि. 2072	25/10/2015	रविवार
20.	क्षमा-पर्व	दीपावली (ऋषि निर्वाण दिवस)	कार्तिक अमावस्या, वि. 2072	11/11/2015	बुधवार
21.	बलिदान-पर्व	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	मार्गशीर्ष/ शुक्ल 13, वि. 2072	23/12/2015	बुधवार

नोट : देशी तिथियों में घट-बढ़ होने से पर्व तिथि में परिवर्तन हो सकता है।
- महामन्त्री, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15, हनुमान रोड, नई दिल्ली- 110001

आर्यसमाज एवं आर्य विचारधाराओं से सम्बन्धित डाक टिकटें

इन टिकटों को फ्रेम करके आर्यसमाजों में लगाएं ताकि इतिहास सुरक्षित रहे

भारतवर्ष विभिन्नताओं का देश है । अर्थात् अनेकताओं में एकता इसकी एक महान् विशेषता है। यह विभिन्न संस्कृति एवं सभ्यताओं का एक संगठन प्रतीत होता है। परंतु इस की संस्कृति और सभ्यताओं के मूल को जब हम खोजना चाहते हैं तो वहाँ हमें इनका उद्भव, वैदिक संस्कृति और सभ्यता ही दृष्टिपात होती है। यह आर्यावर्त्त की भूमि देवों की भूमि है। पतंजलि गौतम कपिल और कणाद के विज्ञान की भूमि है इसके एक एक कण में विज्ञान की धारा प्रस्फुटित हो रही है इसका परमाणु रहस्यों को प्रकट कर आज हम आधुनिक भारतवर्ष के उस सत्य को सप्रमाण एक डाक टिकट के माध्यम से प्रकट करना चाहते हैं, जिसको तात्कालिक भारत सरकार ने प्रमाण रखते हुए भी प्रकट करना नहीं चाहा। वह घटना है 'महात्मा गाँधी के महात्मा बनने की घटना।'

सज्जनों! कुछ वर्षों पहले समाचार पत्रों एवं टी.वी. चैनलों के माध्यम से एक चर्चा फैली कि मि. गाँधी कैसे 'महात्मा' बने, यह शब्द कहां से आया, किसने इसको सर्वप्रथम मि. गाँधी जी के लिए प्रयुक्त किया, तो उसके उत्तर में भिन्न-भिन्न विचार सामने आए। किसी ने कहा कि - उनको सर्वप्रथम महात्मा शब्द से श्री रविन्द्रनाथ टैगोर ने पुकारा। किसी ने कहा कि श्री विनोवा भावे जी ने उनको यह सम्मान दिया, और कुछ दिन बाद घटना को गोल-मोलकर शान्त कर दिया गया और वास्तविकता को किसी ने प्रकट करना नहीं चाहा भारत सरकार द्वारा मार्च 1970 में स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती के नाम से एक डाक टिकट जारी की गई। उस टिकट जारी करने के निमित्त 'स्टैम्प इन्फोरमेशन' नोट में स्पष्ट लिखा है कि -

"This is also the institutions towards which Mahatma Gandhi was first drawn while he was in south Africa and where he stayed first on his return to India. It was this institution which conferred on Gandhi ji the title of the 'Mahatma.'

जब गांधी जी दक्षिण अफ्रीका में थे तभी उनका ध्यान इस संस्था (गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार) की ओर भी प्रथम बार आकर्षित हुआ और जब वे भारत आए तो पहले यहीं ठहरे। इसी संस्था (स्वामी श्रद्धानन्द जी) ने गांधी जी को 'महात्मा' की उपाधि प्रदान की।

अत: हमें सत्य को स्वीकार करना ही होगा पूरे समाज के सामने यह गोपनीय सत्य प्रत्यक्ष करना होगा। हमारी सरकार को भी चाहिए कि वह सत्य को प्रकाशित करे जिससे जनता में किसी प्रकार का भ्रम उत्पन्न न हो। **भारत सरकार द्वारा निकाली गई आर्य समाज की विचारधारा से सम्बन्धित महापुरुषों एवं शहीदों के नाम से डाक टिकटें :** -

1 आर्य समाज स्थापना शताब्दी
2 स्वामी दयानन्द जन्म शताब्दी
3 गुरुवर विरजानन्द दण्डी
4 गुरुकुल कांगड़ी हरिद्वार
5 स्वामी श्रद्धानन्द सरस्वती
6 हेमू कालाणी
7 आर्य समाज की 125वीं वर्षगांठ
8 लाला लाजपतराय
9 लाला हरदयाल
10 चन्द्रशेखर आजाद
11 श्याम जी कृष्ण वर्मा
12 भाई परमानन्द
13 मुंशी प्रेमचन्द
14 विनायक दामोदर सावरकर

भारतीय डाक विभाग द्वारा उपरोक्त डाक टिकटें समय समय पर जारी की गई है। यहां तक कि अन्य देशों में भी आर्यसमाज एवं आर्य महापुरुषों के नाम से डाक टिकटें जारी की गई हैं जिनमें दक्षिण अफ्रीका, सूरीनाम, फिजी, मॉरीशस आदि प्रमुख हैं। इन टिकटों के साथ सम्बन्धित महापुरुषों के कृतित्त्व के विषय में अल्परूप से लेख प्राप्त होते हैं जो ऐतिहासिक धरोहर हैं। **आप इन टिकटों को फ्रेम करके आर्यसमाज में लगाएं ताकि इतिहास सुरक्षित रहे।** दिल्ली सभा के विक्रय विभाग में भी टिकट उपलब्ध हैं जो अत्यन्त सीमित मात्रा में हैं। 1990 से पूर्व की डाक टिकट 100/- रुपये में तथा बाद वाली 50/- रुपये प्रति टिकट की दर से प्राप्त की जा सकती हैं। यदि आपके पास कोई ऐसी दुर्लभ टिकट हो तो उसकी मूल प्रति सभा को भेजने का कष्ट करें, जिससे इस इतिहास को सुरक्षित रखा जा सके। इस हेतु यदि आप कोई मूल्य प्राप्त करना चाहे तो सूचित करें टिकट प्राप्त होने पर आपको राशि भेज दिया जाएगा।

प्रथम पृष्ठ का शेष

उत्साह, संकल्प और धूम.....

वास्तव में पर्वों की उत्कृष्ट परम्परा भारतवर्ष की संस्कृति और सभ्यता की धरोहर है। इसलिए हमारा कर्त्तव्य है कि उसके विशुद्ध रूप उद्देश्य, उद्भव, परिणाम एवं मनाने के वैदिक, सामाजिक और भौगोलिक विधान एवं परम्परा को आगे प्रसारित करते चले जाएं। जिससे लाखों वर्षों पुरानी ये परम्पराएँ इसी प्रकार समाज का दिशा निर्देशन एवं मानव में महानता का संचार करती हुई आगे बढती रहे। ये उदात्त भावनाएँ जहाँ प्राकृतिक रूप से अनेक बृहद् रहस्यों को अपने में छिपाए हैं वही सामाजिक तौर पर भी ये अनेक ऐतिहासिक तथ्यों को अपने में संजोये हुए हैं।

जब हम वसन्त-पंचमी के परिदृश्य में जाना चाहते हैं तो एक दग्ध चिंगारी हमारे रोंगटे खडे कर देने का कार्य करती है कि एक बालक हकीकत राय धर्म की प्रतिमूर्ति बनकर वीभत्स मृत्यु को सामने देखकर भी धर्म का किसी प्रकार भी त्याग नहीं करता है? उस महान् बलिदानी की यादों को लेकर ये वसन्त-पंचमी हमारे सामने प्रस्तुत हो जाती है। फाल्गुन कृष्ण दशमी का पर्व महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस के रूप में उनका स्मरण कराता है। जिसका आधारभूत पर्व एक महानपर्व महर्षि बोध दिवस, अथवा महाशिवरात्री के नाम से भी जाना जाता है। लेकिन जब हम पौराणिक जगत् में महाशिवरात्रि के हजारो साल के इतिहास को देखते हैं तो समाज में पाखण्ड, अंधविश्वास और अज्ञानता के अतिरिक्त कुछ भी दृष्टिपात् नहीं होता है। लेकिन सन (1837) की वह महिमा मण्डित महाशिवरात्रि जिसनें एक महत् तत्त्व को जन्म दिया और सम्पूर्ण भूमण्डल पर "ऋषि बोध-रात्रि" के नाम से सुविख्यात् हो गई हैं। आज हम उस महान पर्व को वास्तविक स्वरूप में मनाने अथवा वैदिक धर्म व आर्य समाज के प्रचार प्रसार के दृष्टिकोण से अधिक उपयोगी हो सके, कुछ महत्वपूर्ण सुझाव निम्न प्रकार है -

1-महर्षि दयानन्द की जयन्ती अर्थात् ऋषि-पर्व पर यज्ञों और वेद प्रचार का विशेष आयोजन होना चाहिए। प्रत्येक आर्य महानुभाव को चाहिए कि वे अपने मुहल्ले में घर-घर जाकर विशेष यज्ञों का आयोजन करें। साथ ही महर्षि दयानन्द, आर्य समाज और वेद के संबंध में विशेष जानकारी देने का कार्यक्रम आयोजित करें। उपदेशकों के उपदेश और आर्ष साहित्य का वितरण करें जिससे जनमानस को ऋषि के व्यक्तित्व और कृतित्व की ठीक-ठीक जानकारी हो सके।

2-प्रत्येक आर्य महानुभाव और आर्य संस्थाओं को चाहिए कि वे अपने शुभ निवास स्थान पर 'ओ३म् ध्वज' फहराएँ और ऐसे आयोजन भी करें जिसमें जनमानस की भागीदारी हो।

3- नई पीढ़ी और बच्चों को वैदिक धर्म, आर्य समाज और महर्षि दयानन्द से सम्बन्धित साहित्य का वितरण कर उन्हें प्रेरणा देने के लिए प्रत्येक आर्य समाज को संकल्प के साथ आगे आना चाहिए। 'बाल मेले' और बाल प्रतियोगिताओं का भी विशेष आयोजन किया जा सकता है।

4- महर्षि के जीवन का मुख्य लक्ष्य 'कृण्वन्तो विश्वमार्यम्' और उनके आदर्श समाज और संस्कृति निर्माण के लक्ष्य का ध्यान रखते हुए ऐसे कार्यक्रम बनाए जाने चाहिए जो जन साधारण पर प्रभाव डालने वाले हों। मीडिया का अधिकाधिक प्रयोग ऋषि-पर्व को स्मरण दिलाने के लिए ही नहीं बल्कि आदर्श समाज, संस्कृति चेतना और वैदिक धर्म के प्रचार-प्रसार के निमित्त भी करें। दैनिक पत्रों और पत्रिकाओं में विज्ञापन बड़े पैमाने पर देने की अभी से तैयारी प्रारंभ कर दें।

5- महर्षि दयानन्द का चित्र, लघु जीवनी और वेद सम्बन्धी साहित्य का वितरण के लिए भी तैयारी करें। अपने क्षेत्र के अधिकाधिक लोगों को प्रेरित करके इसमें सम्मिलित करें।

6- प्रभातफेरी और शोभायात्रा का वृहद् स्तर पर आयोजन करें।

7- समाज के असहाय, निर्बल, रोगी और उपेक्षित लोगों के लिए ऋषि लंगर का आयोजन करें। अपने घर, परिवार, आस-पास के लोगों को मिठाइयां बांटें। आर्यसमाजें क्षेत्रीय जनता जैसे उच्च पुलिस अधिकारी, विभिन्न विषयों के विशेषज्ञ जैसे डॉक्टरों, वकील, इन्जीनियर इत्यादि तथा विशेष रूप से छात्र वर्ग को आर्यसमाज तथा स्वामी दयानन्द के विचारों से परिचित कराने हेतु अल्पमूल्य का लघु साहित्य वितरित करें। इस हेतु बालोपयोगी कुछ वैदिक साहित्य यथा- 'मानव कल्याण के स्वार्णिम सूत्र, महर्षि दयानन्द जन्मोत्सव बैनर, लघु (बाल) सत्यार्थ प्रकाश, महर्षि दयानन्द की रंगीन चित्रावली, एवं आर्यसमाज के कार्य एवं इतिहास की जानकारी देता 'एक निमन्त्रण' पत्रक आदि विशिष्ट प्रचार सामग्री विशेष रूप से धर्म प्रचार हेतु दिल्ली सभा के विक्रय विभाग में उपलब्ध है। आप इन्हें क्रय करके वितरित कर सकते हैं।

8- स्थानीय स्तर पर निकलने वाले पत्र-पत्रिकाओं में लेखादि और विज्ञापन देकर प्रत्येक आर्य महानुभाव अपने कर्त्तव्य का सम्यक् पालन करते हुए आर्यत्व का परिचय दे सकते हैं।

9- आर्य समाज के स्वार्णिम इतिहास पर कार्यशालाएँ शिविर और सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी प्रत्येक दृष्टि से उत्तम होगा।

10- जनहित में परोपकार एवं सेवा वाले कार्यो जैसे चिकित्सा शिविर, सामूहिक विवाह, रक्तदान शिविर और चिकित्सकीय जाँच शिविर का आयोजन जैसे अनेक सेवाभावी कार्य इस विशेष अवसर पर किए जाने चाहिए।

11- महर्षि दयानन्द के जन्मदिवस एवं बोध दिवस की बधाई 'ऋषि-पर्व की शुभकामनाओं के रूप में अवश्य प्रत्येक आर्य महानुभाव को अपने सभी शुभचिन्तकों को भेजनी चाहिए।

उपरोक्त प्रकार से आर्य पर्वो को मनाएँ, इनके उद्देश्य एवं उपयोगिता को संज्ञान में रख अन्यों को भी अवगत कराएं। इस विषय को ध्यान में रखते हुए दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एक प्रतियोगिता आयोजित करने जा रही है। प्रतियोगिता को परिणाम आर्य संदेश के माध्यम से आपके समक्ष भेजा जाएगा इसी प्रकार से प्रतियोगिताओं के माध्यम से भी वैदिक शिक्षा को नई संतति में पहुँचाया जा सकता है। इसके लिए हम सबको प्रयास करना चाहिए।

उपनिषद् एवं वेदान्त दर्शन का अध्ययन स्वर्णिम अवसर

वानप्रस्थ साधक आश्रम, आर्यवन, रोजड़ में पिछले वर्ष से शिक्षा, आष्टाध्यायी, व्याकरण आदि उपांगों का अध्ययन-अध्ययन ऋषि प्रणाली से चल रहा है। उपनिषद् एवं वेदान्त दर्शन का अध्यापन भी शीघ्र आरम्भ होने जा रहा है। इच्छुक महानुभाव अपना पूर्ण परिचय - नाम, आयु, पता, फोन, शै.योग्यता आदि -vaanaprastharojad@gmail.com पर भेजे अथवा पत्र व्यवहार करे।

- ज्ञानेश्वरार्यः 9426408026

ओ३म्

भारत में फैले सम्प्रदायों की निष्पक्ष व तार्किक समीक्षा के लिए उत्तम कागज़, मनमोहक जिल्द एवं सुन्दर आकर्षक मुद्रण (द्वितीय संस्करण से मिलान कर शुद्ध प्रामाणिक संस्करण)

सत्य के प्रचारार्थ

सत्यार्थ प्रकाश

सत्य के प्रचारार्थ

● प्रचार संस्करण (अजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 50 रु.	प्रचारार्थ 30 रु.	प्रचारार्थ मूल्य पर कोई कमीशन नहीं
● विशेष संस्करण (सजिल्द) 23×36÷16	मुद्रित मूल्य 80 रु.	प्रचारार्थ 50 रु.	
● स्थूलाक्षर सजिल्द 20×30÷8	मुद्रित मूल्य 150 रु.		प्रत्येक प्रति पर 20% कमीशन

10 या 10 से अधिक प्रतियाँ लेने पर विशेष अतिरिक्त कमीशन

कृपया, एक बार सेवा का अवसर अवश्य दें और महर्षि दयानन्द की अनुपम कृति **सत्यार्थ प्रकाश** के प्रचार प्रसार में सहभागी बनें

आर्ष साहित्य प्रचार ट्रस्ट
427, मन्दिर वाली गली, नया बांस, दिल्ली-6
Ph. :011-43781191, 09650622778
E-mail : aspt.india@gmail.com

ग्रन्थ परिचय

ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका

प्रश्न 1: वेदों का भाष्य लिखने से पूर्व भूमिका के रूप में महर्षि ने कौन-सा ग्रन्थ लिखा था?

उत्तर: ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका।

प्रश्न 2: ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका लिखने में महर्षि का उद्देश्य क्या था?

उत्तर : महर्षि से पूर्व लिखे गये भाष्यों और टीकाओं से वेदों के विषयों में जो अनेक प्रकार की भ्रान्तियाँ फैल गई थीं और उन पर जो मिथ्या दोषारोपण हो रहे थे, उनको दूर करना इस ग्रन्थ का मुख्य उद्देश्य था।

प्रश्न 3: इन भ्रान्तियों आदि को दूर करके महर्षि ने इस ग्रन्थ 'ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका' द्वारा क्या प्रतिपादित किया है?

उत्तर : वेद विषयक प्रचलित भ्रान्तियों को दूर करके महर्षि ने इस ग्रन्थ द्वारा लोगों के समक्ष वेदों का सत्य अर्थ प्रकट करने का प्रयास किया जिससे वेदों के वास्तविक और सनातन अर्थ को सब भलीभाँति जान सकें।

प्रश्न 4: ऋग्वेदादिभाष्य भूमिका की रचना महर्षि ने कब की?

उत्तर: महर्षि ने विक्रम सं. 1993 भाद्र शुक्लपक्ष की प्रतिपदा, रविवार के दिन (20 अगस्त, 1976) से इस ग्रन्थ की रचना प्रारंभ की और इसकी समाप्ति सं. 1993, मार्गशीर्ष के लगभग प्रथम सप्ताह (पौने तीन माह) में हुई।

प्रश्न 5 : इस ग्रन्थ में कितने अध्याय हैं और अध्याय को क्या नाम दिया गया है?

उत्तर : इस ग्रन्थ में 57 अध्याय हैं। अध्याय को 'विषय' नाम दिया गया है।

प्रश्न 6: यह ग्रन्थ किस भाषा में लिखा गया है?

उत्तर : मूलत: संस्कृत भाषा में लिखा गया है। इसके साथ-साथ हिन्दी भाषा में अनुवाद भी प्रस्तुत है।

प्रश्न: 7 इसमें प्रतिपादित कुछ विषयों का नाम बता सकते है?

उत्तर : ईश्वरप्रार्थना विषय, वेदोत्पत्ति विषय, वेदों का नित्यत्व विषय, विज्ञानकाण्ड, कर्मकाण्ड, सृष्टि विद्या, गणित विद्या, प्रार्थना-याचना-समर्पण, मुक्ति, नौ विमानादि विद्या, वैद्यकशास्त्रमूलविषय, पुनर्जन्म, विवाह, राजप्रजाधर्म विषय आदि।

विशेष : 'ऋग्वेदादि भाष्य भूमिका' एक महत्त्वपूर्ण ग्रंथ है। वेद के तत्त्व अथवा सार को समझने के लिए महर्षि दयानन्द कृत इस ग्रंथ का अध्ययन आवश्यक है क्योंकि उसको समझे बिना वेदार्थ को प्रत्यक्ष करना असम्भव है। यह ग्रंथ केवल लागत मूल्य पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा की विक्रय विभाग में उपलब्ध है। आप पुस्तक क्रय कर स्वयं भी ज्ञानार्जन करें और दूसरों को भी प्रेरित कर धर्म प्रचार में अपनी सहभागिता सुनिश्चित करें।

(महर्षि दयानन्द ग्रन्थ परिचय से उद्धृत)

अगले अंक में एक और ग्रंथ के परिचय की प्रस्तुति होगी। - सम्पादक

रतनचंद आर्य पब्लिक स्कूल
सरोजनी नगर नई दिल्ली का
वार्षिकोत्सव एवं धर्मवीर बाल हकीकत राय बलिदान दिवस
रविवार 1 फरवरी, 2015

स्थान: आर्यसमाज विनयनगर, वाई ब्लाक, सरोजनी नगर नई दिल्ली
यज्ञ - पात: 8:30 से 9:30 बजे
ब्रह्मा : श्री रामानंद आचार्य
बच्चों के कार्यक्रम : प्रात: 10 से 12बजे
श्रद्धांजलि सभा : 12:30 बजे
अध्यक्षता - महाशय धर्मपाल जी
मुख्य अतिथि - श्री धर्मपाल आर्य
आर्यजन अधिकाधिक संख्या में पहुंचकर वीर हकीकत राय को अपने श्रद्धासुमन अर्पित करें।

- पुरुषोत्तमलाल गुप्ता, महामंत्री

आर्यसमाज, बांगरमऊ (उन्नाव उ.प्र.) का
43वां वार्षिकोत्सव

आर्यसमाज आर्य नगर, बांगरमऊ का 43वाँ वार्षिकोत्सव 4 से 6 फरवरी 2015 तक मनाया जा रहा है। वार्षिकोत्सव समारोह में मुख्य वक्ता आचार्य उमेश कुलश्रेष्ठ तथा भजनोपदेशक पं. हरिचन्द्र आर्य होंगे।

- प्रणव आर्य, मंत्री

आर्यसमाज रोहतक में
योग प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न

आर्यसमाज रोहतक (हरियाणा) द्वारा आचार्य ज्ञानेश्वर आर्य जी के कुशल नेतृत्व एवं दिशा निर्देशन में 28 दिसम्बर को क्रियात्मक योग आवासीय प्रशिक्षण शिविर उत्साह पूर्वक सम्पन्न हुआ। जिसमें शिविरार्थियों ने योग-ध्यान सन्ध्या एवं यज्ञ आदि का प्रशिक्षण पूर्वक शिविर में सहभागिता की। *- मन्त्री*

कोझीकोड (केरल) में मकर संक्रान्ति पर यज्ञ

कश्यपाश्रम कोजीकोड़ केरल में मकर संक्रान्ति पर्व के उपलक्ष्य में अचार्य एम. आर. राजेश के ब्रह्मत्व में अथर्ववेद यज्ञ का आयोजन किया गया। इस अवसर पर वेदपाठ आश्रम के ब्रह्मचारियों ने किया। कश्यप वेद अनुसंधान फाउन्डेशन के निदेशक डॉ. पी.डी. विपिन ने दीप जलाकर कार्यक्रम शुभारम्भ किया।

- आचार्य

छात्रवृत्ति हेतु आवेदन भेजें

आर्ष पाठ-विधि से विद्याध्ययन करने वाले छात्रों को सूचना प्रेषित की जाती है कि जो विद्यानुरागी, अपने अभिभावकों से आर्थिक सहायता नहीं पाते है अथवा अभिभावक सहयोग करने में असमर्थ हैं। ऐसे विद्यार्थी अपना नाम -पता विद्यालय का नाम और अपने आचार्य महानुभाव के हस्ताक्षर कृत सम्पर्क सूत्र के साथ आवेदन प्रार्थना पत्र दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-110001 के पते पर प्रेषित करें। *- महामन्त्री*

'आस्था' पर प्रेरक वैदिक प्रवचन - प्रतिरात्रि : 9:30 बजे

प्रत्येक सोमवार एवं मंगलवार -	आचार्य ज्ञानेश्वरार्य	(प्रेरक-प्रवचन)
प्रत्येक बुधवार -	आचार्य सत्यजित् आर्य	(योग दर्शन)
प्रत्येक गुरुवार -	डॉ0 विनय विद्यालंकार	(व्यक्तित्व-विकास)
प्रत्येक शुक्रवार व शनिवार -	डॉ0 वागीश आचार्य	(प्रेरक प्रवचन)

गुरुकुल आश्रम आमसेना का
48वाँ वार्षिकोत्सव
दिनांक 7, 8, 9 फरवरी 2015

उत्सव के अवसर पर चौ॰ शीशराम आर्य की पुण्य स्मृति में 1 फरवरी से दिव्यवाणी ऋग्वेद के पावन मंत्रो से महायज्ञ पं॰ विशिकेशन जी शास्त्री के ब्रह्मत्व में सम्पन्न होगा। पूर्णाहुति 9 फरवरी को होगी। समारोह में स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, विशुद्धानन्द जी, स्वामी अभेदानन्द जी एवं अनेक आर्य विद्वान एवं भजनोपदेशक पधारेंगे। चौ॰ मित्रसेन आर्य की पुण्य स्मृति में परममित्र मानव निर्माण संस्थान की ओर से 8 फरवरी को तीन विद्वानों को सम्मानित किया जायेगा। इसके अतिरिक्त गुरुकुल के नैष्ठिक ब्रह्मचारियों के माता:पिता एवं 80 वर्ष से अधिक आयु वाले आर्य समाज के सेवाव्रती बुजुर्गों का सम्मान भी किया जाएगा। इस अवसर पर गुरुकुल सम्मेलन 8 फरवरी को होगा। जिसमें गुरुकुल के ब्रह्मचारी एवं कन्या गुरुकुल की ब्रह्मचारिणियों के द्वारा रोमांचक एवं आकर्षक व्यायाम प्रदर्शन श्री डॉ. कुज्जदेव जी मनीषी के नेतृत्व में होगा।

- स्वामी धर्मानन्द सरस्वती, संचालक

ऐतिहासिक घटनाएं भेजें

सभी पाठक महानुभावों से निवेदन है कि जिस किसी सज्जन को आर्य समाज के इतिहास की कोई घटना, किसी आर्य समाज मंदिर की स्थापना से सम्बन्धित किसी ऐतिहासिक तथ्य अथवा घटना की जानकारी हो, तो aryasandeshdelhi@gmail.com पर ईमेल भेजकर कृतार्थ करें। अध्येताओं एवं शोधकर्त्ताओं से अनुरोध है कि अपने आर्य समाज से सम्बन्धित अथवा वैदिक ज्ञान विज्ञान के शोधपूर्ण लेख समाजकल्याण हेतु उपरोक्त ईमेल आईडी पर भेजने की कृपा करें जिससे जन सामान्य को लाभ प्राप्त हो सकें। *- सम्पादक*

वैदिक रैफरेंस लाइब्रेरी हेतु पुस्तकें भेजें

सर्व सज्जनों को सूचित किया जाता है कि अपने लाइब्रेरी से पुरानी पुस्तकें नाम व पता लिखकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा द्वारा स्थापित 'वैदिक रैफरेंस लाइब्रेरी' में भिजवाने की कृपा करें। वैदिक ज्ञान की अमूल्य निधि एक छोटी सी पुस्तक हजारों लोगों को लभान्वित कर सकती है। कृपया अपनी पुस्तकें रजिस्टर्ड डाक द्वारा निम्नलिखित पते पर भेजें - *वैदिक सन्दर्भ पुस्तकालय, दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15 हनुमान रोड, नई दिल्ली-1*

योग-ध्यान, साधना शिविर

आनन्दधाम (गढ़ी आश्रम) उधमपुर, जम्मू में आश्रम के मुख्य संरक्षक एवं निदेशक पूज्यपाद महात्मा चैतन्यमुनि जी के सान्निध्य में दिनांक 11 से 19 अप्रैल 2015 तक नि:शुल्क योग-ध्यान-साधना शिविर का आयोजन किया जाएगा जिसमें अनुभवी आचार्यों एवं महात्माओं द्वारा उपासना,प्राणायाम,योगासन आदि कराए जाऐंगे तथा योगदर्शन-पाठनपाठन की भी व्यवस्था है। शिविर में रोजड़, गुजरात से शिक्षित आचार्य श्री संदीप आर्यजी प्रबुद्ध वैदिक प्रवक्ता श्री अखिलेश भारतीय जी आदि अन्य अनेक विद्वान भी पधार रहे है। डा0 सुरेशजी योग द्वारा रोगोपचार भी करेंगे। इस अवसर पर पूज्य महात्माजी के ब्रह्मत्व में सामवेद पारायण यज्ञ का आयोजन किया गया है। शिविर में साधक अपनी शंकाओं का समाधान भी कर सकेंगे। अत: इच्छुक साधक अपना स्थान आरक्षित करने के लिए फोन नं. 09419107788, 09419796949 अथवा 09419198451 पर तुरन्त सम्पर्क करें।

- भारतभूषण आनन्द, आश्रम प्रधान

गुरुकुल प्रभात आश्रम का वार्षिकोत्सव सम्पन्न

13 जनवरी को स्वामी समर्पणानन्द वैदिक शोध संस्थान के तत्त्वाधान में अखिल भारतीय शोध संगोष्ठी का आयोजन किया गया। जिसका विषय था 'वैदिक वाङ्मय में देवताओं का स्वरूप'। संगोष्ठी अध्यक्ष डॉ0 जयदत्त उत्प्रेती, अल्मोड़ा थे। 14 जनवरी को स्वामी विवेकानन्द सरस्वती के ब्रहमत्व में यज्ञ प्रारम्भ हुआ। नव प्रविष्ट ब्रहमचारियों का उपनयन व वेदारम्भ संस्कार सम्पन्न हुआ। पं0 शोभाराम प्रेमी व अन्य भजनोपदेशकों ने सुमधुर भजन प्रस्तुत किया। अन्त में स्वामी जी ने आशीर्वचन तथा राष्ट्र रक्षा का संदेश दिया। *- आचार्य*

आर्यसमाज कायमगंज फर्रूखाबाद का
वार्षिकोत्सव सम्पन्न

आर्य समाज मंदिर कायमगंज फर्रुखाबाद (उ0प्र0) का वार्षिकोत्सव दिनांक 26, 27, 28 दिसम्बर, 2014 को बड़े हर्षोल्लास के साथ मनाया गया जिसमें वैदिक विद्वान आचार्य वेदप्रकाश जी व्याकरणाचार्य, आचार्य अभिषेक जी कोटद्वार, पं. योगेशदत्त जी भजनोपदेशक बिजनौर, पं. रामवीर शास्त्री, आचार्य प्रियंका भारतीय, ब्र. राजदेव आदि विद्वानों ने समाज के लोगों का मार्गदर्शन किया।

- केशवचन्द्र, मंत्री

शोक समाचार

श्री ओम प्रकाश वर्मा को पत्नी शोक

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के प्रधान पद को वर्षों तक सुशोभित करने वाले स्व. ब्र राजसिंह आर्य जी के अग्रज श्री ओमप्रकाश वर्मा जी की धर्मपत्नी श्रीमती शीला वर्मा जी का 72 वर्ष की आयु में दिनांक 23 जनवरी, 2015 को निधन हो गया। उनका अंतिम संस्कार निगम बोध घाट पर आर्य समाज मॉडल बस्ती के धर्माचार्य श्री जयप्रकाश शास्त्री जी के द्वारा पूर्ण वैदिक रीति से सम्पन्न कराया गया।

उनकी स्मृति में शोक सभा दिनांक 26 जनवरी 2015 को श्री हनुमान मंदिर विजय नगर में हुई जिसमें दिल्ली की अनेक आर्यसमाजों के अधिकारियों एवं परिजनों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। श्रीमती शीला वर्मा जी अपने पीछे पति, पुत्र एवं पौत्र-पौत्रियों से भरापूरा परिवार छोड़ गयी है।

श्री ईश नारंग को भगिनी शोक

शास्त्रार्थ महारथी स्व. श्री शान्ति प्रकाश की पुत्रवधू एवं आर्य समाज कर्मठ कार्यकर्त्ता स्व. श्री शान्ति प्रकाश नारंग की पुत्री, आर्यसमाज मयूर विहार-2 की प्रधाना एवं आर्य समाज दयानन्द विहार के मंत्री श्री ईश नारंग की बहन श्रीमती जयदेवी छाबड़ा जी 23 जनवरी 2015 को 76 वर्ष की आयु में निधन हो गया। वे एक आर्य श्रेष्ठी, यज्ञ प्रेमी, स्वाध्यायशीला सात्विक जीवन जीने वाली महिला थी। उन्होंने अपने जीवन में 108 बार सामवेद पारायण यज्ञ अपने ही घर पर किया। उन्होंने सत्यार्थ प्रकाश का अनेक बार अध्ययन किया एवं आर्य समाज मयूरविहार में इसकी कक्षाएं भी चलाई। उनकी स्मृति में 26 जनवरी, 2015 को आर्य समाज मयूरविहार फेज-2 में श्रद्धांजलि सभा आयोजित हुई जिसमें आर्य समाजों के अनेक अधिकारियों ने पहुंचकर अपने श्रद्धासुमन अर्पित किए। उनकी इच्छानुसार उनकी आंखें दान की गई एवं अस्थियों को खेतों में डाला गया।

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा एवं आर्यसन्देश परिवार के समस्त अधिकारी एवं कार्यकर्त्ता परमपिता परमात्मा से प्रार्थना करते हैं कि वे दिवंगत आत्माओं को सद्गति एवं शोक-संतप्त परिजनों को इस दारुण दु:ख को सहन करने की शक्ति, सामर्थ्य एवं उनके पदचिह्नों पर चलने की प्रेरणा प्रदान करे। -सम्पादक

साप्ताहिक आर्य सन्देश

सोमवार 26 जनवरी से रविवार 1 फरवरी, 2015

दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान् रोड, नई दिल्ली–110001

दिल्ली पोस्टल रजि.नं0 डी.एल.(एन.डी.)–11/6071/2015–2017

नई दिल्ली पी.एस.ओ. में पोस्ट करने का दिनांक 29/30 जनवरी, 2015

पूर्व भुगतान किए बिना भेजने का लाइसेन्स नं0 यू0(सी0) 139/2015–2017

आर. एन. नं. 32387/77 प्रकाशन तिथि: बुधवार 28 जनवरी, 2015

प्रेरक कार्य

वेद का स्वाध्याय कर समाज की मुख्य धारा से जुड़ें-के.के. कौल

केन्द्रीय कारागृह कोटा को कैदियों हेतु वेदों का सेट भेंट

ईश्वरीय वाणी वेद में हमें सकारात्मक सोच देती है। वेद हमें अच्छे विचार देता है, मानवीय गुणों का विकास वेद से होता है। वेद का स्वाध्याय करें। समाज की मुख्य धारा से जुड़े। उक्त विचार मुख्य अतिथि के.के. कौल, पूर्णकालिक निदेशक डी.सी.एम. श्रीराम ने केन्द्रीय कारागृह कोटा में आर्यसमाज जिलासभा कोटा द्वारा आयोजित कार्यक्रम में व्यक्त किए ।

जिला सभा के प्रधान अर्जुनदेव चड्ढा ने कहा कि महर्षि दयानन्द सरस्वती ने आर्यसमाज की स्थापना कर समाजसेवा का मूलमंत्र दिया। महर्षि दयानन्द वेद प्रचार समिति कोटा के अध्यक्ष अरविन्द पाण्डेय ने कहा कि सभी समस्याओं का समाधान वेद में है। इस अवसर पर जेल के पुस्तकालय के लिए वेद 14 पुस्तकों का सेट जेल अधीक्षक शंकर सिंह व जेलर नरेन्द्र स्वामी को भेंट किया गया, जिससे यहाँ शिक्षित कैदी इसका स्वाध्याय करके अपने जीवन को सुधारें व दूसरों के जीवन को भी लाभान्वित करें।

– प्रचार सचिव, जिला सभा कोटा

प्रतिष्ठा में,

दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल द्वारा

अल्मोड़ा में प्रचार कार्यक्रम

उत्तराखण्ड प्रगतिशील शिल्पकार संगठन के तत्त्वाधान में दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल ने स्वतंत्रता सैनानी स्व. खुशीराम आर्य के 129वाँ जन्म दिवस अवसर पर आर्य समाज भिकियासैण जनपद अल्मोड़ा में वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार कार्यक्रम आयोजित किया। 13 दिसम्बर 2014 को संगठन के सदस्यों व मंडल महामंत्री एवं भजनीकों ने ग्राम गहण, डूगरा, झिमार, कुन्हील, वसैड़ी पटौदी (जनपद अल्मोड़ा) में सघन ग्राम प्रसार किया वहां ऋषि व ईश भक्ति भजनोपदेश के माध्यम से भजनोपदेशकों ने जातीय कुरीतियों के विरुद्ध बिगुल बजाया। ग्रामीणों को बलिप्रथा, शराब, गुटखा, मद्यपान छोड़ने व सत्यार्थ प्रकाश पढ़ने के महत्त्व को समझाया तथा मानव कल्याण के स्वर्णिम सूत्र में वर्णित सभी बिन्दुओं पर विस्तार से चर्चा की जिसका पर्वतीय क्षेत्र के जन-मानस पर काफी अच्छा प्रभाव पड़ा। देवव्रत शास्त्री के ब्रह्मत्व में यज्ञ हुआ तथा स्थानीय समाज के अधिकारी मुख्य यजमान बने।

मुख्य अतिथि श्री चतर सिंह नागर ने बताया कि वर्ष 1913 में पंजाब केसरी लाला लाजपतराय ने उत्तराखण्ड का भ्रमण किया और सभी पर्वतीय क्षेत्रवासियों को इकट्ठा करके उन्हें शिल्पकार नाम दिया और नाम के अन्त में आर्य लिखने का अधिकार दिलाया। शिल्पकारों का यज्ञ उपरान्त उपनयन कराया। दक्षिण दिल्ली वेद प्रचार मंडल के सौजन्य से सभी ग्रामवासियों, उपस्थित सदस्यों को नि:शुल्क सत्यार्थ प्रकाश, स्वर्णिम सूत्र व गुटका, अंडा, मांस, मदिरा, धूम्रपान निषेध व ईश्वरीय चिंतन सम्बन्धी पत्रक वितरित किये गये तथा स्थानीय समाज को बड़ा यज्ञ कुण्ड व सामग्री भेंट की।

संयोजक, उत्तराखण्ड प्रगतिशील शिल्पकार युवा संगठन

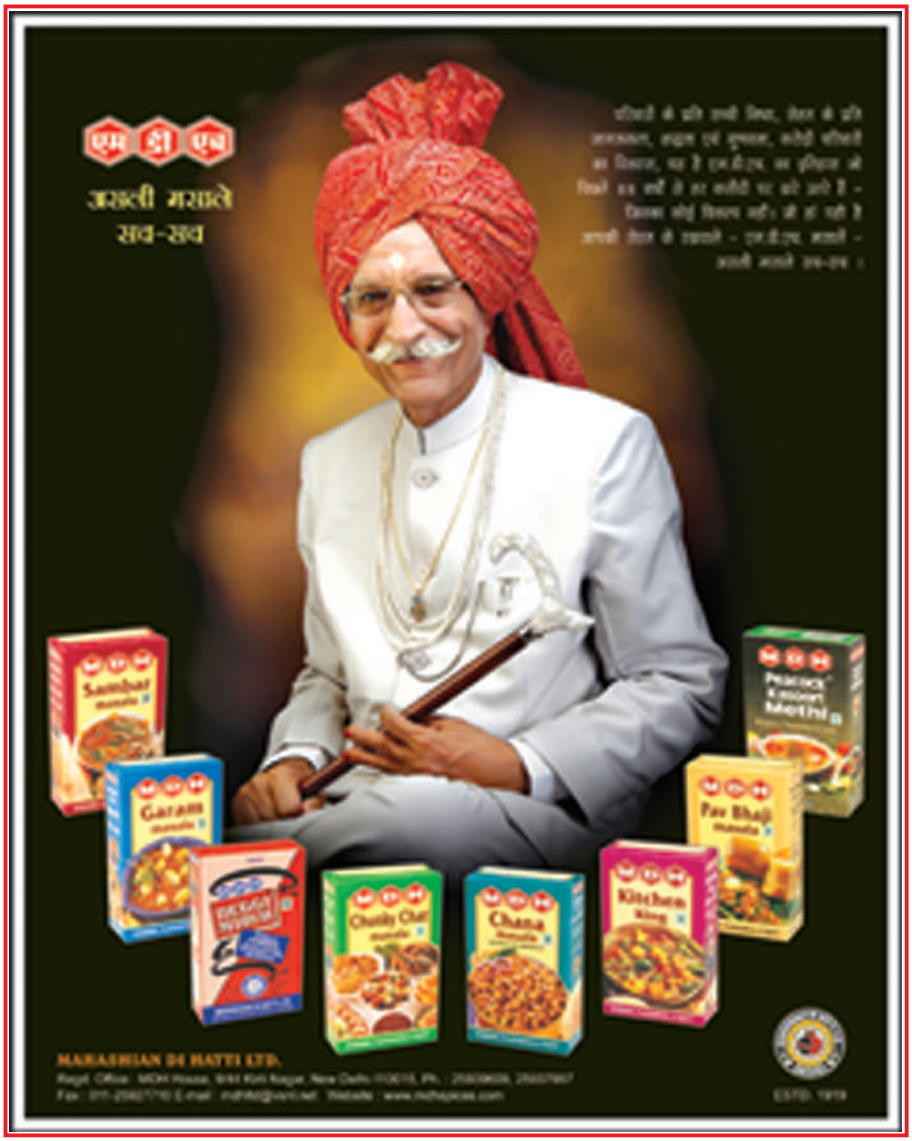

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक ब्र0 राजसिंह आर्य ने दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए हरि हर प्रैस, ए–29/2, नरायणा औद्यो. क्षेत्र–1, नई दिल्ली–28 से छपवाकर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा, 15–हनुमान रोड, नई दिल्ली–1; टेलीफैक्स : 23360150; 23365959; IVRS : 011-23488888 E-mail : aryasabha@yahoo.com से प्रकाशित किया।

सम्पादक : धर्मपाल आर्य सह सम्पादक : विनय आर्य व्यवस्थापक : शिवकुमार मदान सह व्यवस्थापक : आर्य डॉ0 ओमप्रकाश भटनागर, एस. पी. सिंह